

नोना	— दूहे खातिर गाय नइते भईस के पाछू के दूनों गोड़ ला नाई मा बाँधना। (दूहने क लिए गाय या भैंस के पिछले पैरों को रस्सी से बाँधना)
नौसिखिया	— जउन हो कोनो बुता ला नवों-नवों सीखे रथे। (जो किसी कार्य को नया-नया सीखा हो)
पँचहर	— दुलही के मामा घर ले टिकावन मा टीके पाँच ठन बरतन। (वधू के मामा पक्ष द्वारा उपहार स्वरूप प्रदत्त पाँच प्रकार के बर्तन)
पँजरी	— धरम के काम-बुता मा देवी-देवता मन के भोग खातिर पिसान अउ सक्कर ले बनाए परसाद। (धार्मिक कार्यों में देवी-देवताओं के भोग के निमित्त आटे और शक्कर से बनाया जाने वाला प्रसाद)
पँडरू	— भईस्सी के नर पीला। (भैंस का नर बच्चा)
पइठू	— अपन घर — गोसइयाँ ला छोड़ के पर मनख के घर रखेल बन के जवइया। (अपने पति को त्याग कर पराये पुरुष के घर रखैल के रूप में प्रवेश करने वाली)
पइरथन	— रोटी बेले खातिर अलगाय पिसान। (रोटी बेलने के लिए अलग किया हुआ आटा)
पखार	— ऊँच भुइयाँ नइते खेत के डिरा भाग। (ऊँची भूमि या खेत का ऊँचा भाग)
पचकुल	— पाँच किसम के जरी-बूटी ले बने दवाई। (पाँच प्रकार की जड़ी-बूटियों से बनी दवाई)
पजहा	— धार बनावल। (धार किया हुआ)
पठउनी	— बिहाव के बाद नोनी के पहिली बिदा। (कन्या को विवाहोपरांत दी जाने वाली प्रथम बिदाई)
पढ़ता	— अब्बड़ पढ़इया। (अधिक पढ़ने वाला)
पनकल	— आघू ले बाढ़ल। (पहले से बढ़ा हुआ)
पनियर	— पानी कस पातर। (पानी जैसा पतला)
परजौवर	— आने-आने जौड़ी वाला। (विषम युग्म वाला)
पहिरहा	— जउन ला पहिरत रथे। (जिसे पहना जा रहा हो)
पिछवाड़ा	— घर के पाछू के जगा। (महान के पीछे का स्थान)
पिलखहा	— वाजिब (मूल) आकार ले छोटे अनाज के दाना। (अनाज का अपेक्षित आकार से छोटा दाना)
पुचर्चा	— एके ठन बात ला घेरी-बेरी बोलइया। (एक ही बात को बार-बार बोलने वाला)

पुरोना	— कमती ला पूरा करना। (कमी को पूरा करना)
पैउस	— जनमें गाय या भैंस के पियँर दूध। (ब्याई गाय या भैंस का पीला दूध)
पेटबोजवा	— पेट भरे खातिर खाए जाथे तउन खई जेमा सुवाद नई राहय। (क्षुधातृप्ति के लिए खाया जाने वाला स्वादहीन खाद्य)
फुँदरा	— रेसम ले ने बेनी गाँथे के फीता। (केशविन्यास के लिए रेशमी धागों से बना फीता)
फुनइया	— सूपा ले अनाज आदि ला साफ करइया। (सूप से अनाज आदि को साफ करने वाला)
बँकडाइया	— एक जगा बइठ के गवई-बजई। (एक स्थान पर बैठकर गाने-बजाने की क्रिया)
बरदाना	— गाय, भैंस या छेरी के गाभिन होना। (गाय, भैंस या बकरी का गर्भ धारण करना)
बाफुर	— मुहँ के गाजा। (मुँह का झाग)
बिबकी	— चिढ़ाय खातिर मुहँ मटकाना। (चिढ़ाने के लिए बनाई जाने वाली मुद्रा)
बिरवाना	— पहिनावा नइते आदत-बेवहार के नकल उतारना। (वेशभूषा या आदत व्यवहार की नकल करना)
बिल्होरन	— गोठ बात मा अरझा के रखइया। (बातों में उलझाकर रखने वाला)
बिहौअ	— दुसरइया मरद ले सुवारी के पहिली मरद ला देय जाथे तउन डौड़। (द्वितीय पति द्वारा पत्नी के प्रथम पति को दिया जाने वाला विवाह का हरजाना)
बुढ़ियार	— खेती के बुता बर खेती के आधार दिन मा नउकर लगई। (कृषि कार्यों के लिए कृषि वर्ष क आधे दिनों में नौकर लगने की क्रिया)
बुरक्की	— उकुल-बुकुल होय ले मवेसी मन के नरियई। (व्याकुलवश पशुओं द्वारा की जाने वाली अनाज)
बोझहार	— बोझा ढोवइया। (बोझ ढोने वाला)
भँगेलना	— रोका-छेंका ला टोरना। (अवरोध को तोड़ना)
भजनहाँ	— भजन-कीर्तन गवइया। (भजन-कीर्तन गाने वाला)
भठना	— चलन नइ होना। (प्रचलन में न रहना)
भतपरहाबेरा	— संझौती जेवन के बेरा। (संध्याकालीन भोजन का समय)
भनेटी	— लउठी के दूनों मूँड़ी मा बंबर बार क चलई। (दोनों किनारों पर आग लगाकर लाठी चलाने की क्रिया)

भभकई	— आगी के बंबर बरई। (ऊँची लपटों के साथ आग जलने की क्रिया)
भरमाना	— भरम मा राखना। (भ्रमित करना)
भहरना	— बोझा के सेती अंग-अंग मा पीरा भरना। (बोझ का दर्द अंग-प्रत्यंग में फैलना)
भारा	— कटाल बीरता के बोझ। (कटी हुई फसल का गट्ठर)
भुरा	— पेट के अगियई। (पेट में होने वाली जलन)
भूतीपेरा	— डोरी बरे के पेरा। (रस्सी बटने का पैरा)
भेंभनहाँ	— धिनधिना दिखइया। (धिनौना दिखने वाला)
मउहारी	— मउहाँ के बगिच्चा। (महुआ का बगीचा)
मताराना	— मंतर बोल-बोल के पानी ला मथना। (मंत्रोच्चारण के साथ पानी को मथना)
मनखहा	— मनखे मन के तीरे-तीर रहवइया (पशु-पक्षी)। (मनुष्यों के पास-पास ही रहने वाला (पशु-पक्षी))
मनगम	— अपने सौंच-बिचार मा मस्त रहइया। (अपने विचारों में खाय़ा रहने वाला)
मनघोपिया	— उदास रहइया। (उदासीन रहने वाला)
मनुखमार	— मनखे के कतल करइया। (मनुष्य की हत्या करने वाला)
मसगिद्धा	— माँस खवइया। (मांस भक्षण करने वाला)
मसरमोटिया	— उदबिरिस सुभाव वाला। (नटखट स्वभाव वाला)/मनकानी करने वाला
मुँहबाड़	— बढ़-चढ़ के बोलइया। (बढ़-चढ़ कर बोलने वाला)
मुँड़ेरना	— घर मा छान्हीं छाए के पहिली कोठ मा माटी मढ़ना। (महान में छाजन बनाने के पूर्व दीवार पर मिट्टी चढ़ाना)
मुनारा	— गाँव नइते राज के सियार के चिन्हाँ। (गाँव या राज्य का सीमा निर्धारक चिन्ह)
रतमुहाँ	— लाल मुहूँ वाला। (लाल मुँह वाला)
रुखवार	— पेड़ मन मा चघइया। (वृक्षों पर चढ़ने वाला)

रोखमा	— साग के रसा गढ़ियाए खतिर मिलाथे तउन पिसान। (सब्जी का रस गाढ़ा करने के लिए डाला जाने वाला आटा)
लइकोरिन	— दूध पियइया लइका के महतारी। (दूध पीते बच्चे की माँ)
लबडेना	— फटिक के मारे के काम मा लाथे तउन छोटकुन लकड़ी। (फेंक कर माने के लिए पुयक्त की जाने वाली छोटी लकड़ी)
लमेरा	— अपन मन के जागल पौधा नइते नार। (स्वभाविक उगा हुआ पौधा या बेल)
संगभतारी	— घर-गोसइयाँ संग रहइया सुवारी। (पति के साथ रहने वाली स्त्री)
सउँखिया	— सउँख रखइया। (शौक रखने वाला)
सत्तहा	— सत्तनरायन के कथा करइया। (सत्यनारायण की कथा कराने वाला)
सधइया	— कोनो बुता के एकदम जानकार। (किसी कार्य में दक्ष होने वाला)
सरेखना	— बात ला परमानित कराना। (बात की पुष्टि कराना)
सीथा	— भात के दाना। (पके हुए चावल का दाना)
सुठौरा	— छेवारिन ला खवार्थे तउन दवई वाले लाडू। (प्रसूता को खिलया जाने वाला औषधीय लड्डू)
सुपेला	— चिरई-चिरगुन ला खवाए खातिर गूँथे धान के बाली। (पक्षियों के चुगने के निमित्त गूँथी जाने वाली धान की बाली)
सँधरा	— बेर उवे के पहिली के ललियहा अँजोर। (सूर्योदय के पूर्व की लालिमा)
हँडहेरा	— एक परिवार नइते गोत वाले आदमी। (एक ही परिवार या गोत्र का व्यक्ति)
हरेरा	— हवा के चले ले पीपर पेड़ ले निकले आवाज। (वायु चलने से पीपल वृक्ष से उत्पन्न होने वाली ध्वनि)
हाही	— कोनो जिनि स ला पाए के एकदम लालच। (किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा)
हुमकी	— ओकियई क पहिली अवइया डकार। (उल्टी होने के पूर्व आने वाली डकार)

लोकोक्ति (हाना)

कहावतें लोक साहित्य का अभिन्न अंग हैं। इसे छत्तीसगढ़ी में हाना कहते हैं। जिसका उपयोग सीधा सपाट रूप से किसी विशेष बात को रखने के लिए किया जाता है।

	छत्तीसगढ़ी हाना	हिन्दी अनुवाद
1	गेहूँ के संग में कीरा रमजाना	गेहूँ के साथ घुन पीसना
2	कउवाँ कान ल लेगे त, कान ल टमर के देख	कौआ कान ले गया इससे पहले छू कर तो देख
3	चलनी म दूध दूहे, करम ल दोष दे	चलनी म दुध दूहना और भाग्य को दोष देना।
4	कथरी ओढ़ के घी खाय	कंबल ओढ़कर घी खाना
5	एके लउठी म सबला हाँकना	एक लाठी में सबको हाँकना
6	बइरी बर उँच पीढ़ा	बैरी को ऊँचा आसन देना
7	दूधो गे दुहना गे	दूध भी गया, दोहनी भी गयी
8	दूबर बर दू असाढ़	दुर्बल के लिए दो असाढ़
9	घानी कस बइला पेराना	घानी के बैल समान पीसना
10	बाँटे भाई परोसी	बँटवारे के बाद भाई भी पड़ोसी होता है
11	ररूहा सपनाये दार भात	दीन मनुष्य को सपने में दाल-भात दिखता है
12	दूधयारिन गाय के लात मीठ	दूध देने वाली गाय की लात मीठी
13	गाँव के कुकुर गाँव डहर भूकँही	गाँव का कुत्ता गाँव तरफ भौंकता है
14	आय न जाय, चतुरा कहाय	आना जाना नहीं, चतुर कहाना
15	परोसी के बूती साँप नइ मरै	पड़ोसी के भरोसा साँप नहीं मरता
16	कोइली अऊ कउवाँ बोली ले चिन्हाथे	कोयल और कौवे की पहचान बोली से होती
17	हाथी के पेट सोहरी म नइ भरय	हाथी का पेट छोटी सी रोटी खाने से नहीं भरता
18	जेकरे बेंदरा तेकरे ले नाचे	जिसका बंदर उसी से नाचता है
19	खेत चरे गदहा, मार खाय जुलाहा	गदहा खेत चरता है मार जुलाहा खाता है
20	जेकरे खाय, तेकरे गाए	जिसका खाना उसका गाना

21	केहे आन, करे आन	कथनी ओर करनी में अंतर
22	कहइ ले करइ बने	कहने से करने भला
23	महतारी परसे, मघा के बरसे	माँ का परोसा और बादल का बरसा
24	कब बबा मरही, त कब बरा चुरही	कब बबा मरेगा तब घर में बड़ा बनेगा
25	हपटे बन के पथरा, फोरे घर सील	जंगल में किसी पत्थर से ठोकर लगी, आकर सिल फोड़ रहा है
26	केरा कस पान हालत हे	केले की पत्ती की तरह हिलना
27	ररुहा बेंदरा बर पीपर अमोल	लोभी बंदर के लिए पीपल का पत्ता अनमोल
28	धान पान अऊ खीरा, ये तीनों पानी के पीरा	धान, पान और खीरा के लिए अधिक पानी लगता है
29	जइसन बोही, तइसन पाही	जैसा बोओगे, वैसा पाओगे
30	एक नाऊ के मुड़े	एक ही नाई द्वारा मुंडन हुआ

मुहावरा

हाना के असन मुहावरा घलो लोक जीवन ले आथे। एकर बिना कोनो वाक्य के अरथ पुरा नई होय। ए मन मनखे के सहज मं मुँह ले निकलथे। बोले के बेरा आय जेन कोनो बिसेस बात ला केहे बर उपयोग करे जाथे। एहा भाखा के सुन्दरई ल बढ़ाथे अउ एमन सार रूप के बात ल रखे बर बढ़िया उदीम आय।

छत्तीसगढ़ी मुहावरे – हिन्दी अर्थ

छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ	छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ
अंग लगना	– असर होना	करम फाटना	– अभागा होना
अइठ के रहना	– मन मसोस कर रहना	घाठा परना	– अभ्यस्त होना
रोना राही परना	– किसी की की मृत्यु होना	कुआँ म कूदना	– खतरा मोल लेना

नाक रखना	— इज्जत बचाना	तइहा के बात बइहा होना	— पुरानी बातों का महत्त्वहीन होना
करम ठठाना	— भाग्य को दोष देना	बारा कुआँ म बाँस डालना	— बहुत परेशानियाँ झेलना
कुकुर बिलई होना	— दर-दर भटकना	थूँक-थूँक म बरा चूरना	— मृप्त में काम करा लेना
छाती म चढ़ना	— उपद्रव मचाना	हाथ मारना	— लाभ होना
मूड म चढ़ना	— उपद्रवी होना	छाती छोलना	— परेशान करना
मीठ लबरा होना	— चापलूस होना	तरुआ ठठाना	— पछताना
कनिहा टूटना	— असहाय होना	साँप के बिला म हाथ डालना	— खतरा मोल लेना
आँसू पोंछना	— ढाँढ़स बँधाना	कान देना	— ध्यान से सुनना
कोंचई काँदा होना	— विचार सीमित होना	नाक कटाना	— इज्जत गवाना
घुरूवा गांगर होना	— बेकार होना	आँखी म धुरा झोंकना	— धोखा देना
गदहा ल ददा कहना	— विपत्ति में अपात्र की खुशामद करना	दाँत निपोरना	— लज्जित होना
अँचरा लमाना — आँचल फैलाना	— टोना करना	चेथी खुजवाना	— बहाना बनाना
अंडा सेना	— घर में व्यर्थ बैठकर समय गवाँना	कान म तेल डालना	— निश्चित रहना
अटरा होना	— पूछ परख में कमी होना	चुचवा के रहना	— निराश होना
आँखी के पुतरी होना	— प्यारा होना	दिन — बहुरना	— सुख के दिन आना
हँडिया अलग करना	— बँटवारा होना	लाहो लेना	— उत्पात मचाना
रगड़ा टूटना	— परस्त होना		

मुहावरा

कहावतों की तरह मुहावरें भी लोकजीवन से आते हैं। ये वाक्यांश होते हैं वाक्य में इनके उपयोग के बिना अर्थ पूरा नहीं होता ये बोलियों की देन हैं जो किसी विशेष अर्थ के रूप में प्रयोजन में ले लिया जाता है। मुहावरे भाषा के सौंदर्य को बढ़ाते हैं और अभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं।

छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ	छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ
अंग लगना	असर होना	अइठ के रहना	— मन मसोस कर रहना
रोना राही परना	मरजाना	नाक रखना	इज्जत बचाना
करम ठठाना	भाग्य को दोष देना	कुकुर बिलई होना	दर-दर भटकना
छाती म चढ़ना	उपद्रव होना	मूड़ म चढ़ना	उपद्रवी होना
मीठ लबरा होना	चापलूस होना	कनिहा टूटना	असहाय होना
करम काटना	अभाग होना	घाटा परना	अभ्यस्त होना
कुआँ म कूदना	खतरा मोल लेना	तइहा के बात बइहा होना	पुरानी बातों का महत्वहीन होना
बारा कुआँ म बाँस डालना	बहुत परिशानियाँ झेलना	थूँक-थूँक म बरा चूरना	कोरी कल्पना
हाथ मारना	लाभ होना	छाती छोलना	पेशान करना
तरुआ ठठाना	पछताना	साँप के बिला म हाथ डालना	खतरा मोल लेना
कान देना	ध्यान से सुनना	नाक कटाना	इज्जत गवाना
आँखी म धुरा झोंकना	धोखा देना	दाँत निपोरना	लज्जित होना
चेथी खुजवाना	बहाना बनाना	कान म तेल डालना	निश्चिंत रहना
चुचवा के रहना	निराश होना	दिन-बहुरना	सुख के दिन आना
लोहा लेना	उत्पात मचाना	हँडिया अलग करना	बैठवारा होना
रगड़ा टूटना	पस्त होना	अँचरा लमाना	आँचल फैलाना
अंडा सेना	घर में व्यर्थ बैठकर समय गवाँना	अटरा होना	पूछ परख में कमी होना

आँखी के पुतरी होना	प्यारा होना	आँसू पोंछना	ढाढस बंधाना
काँचई काँदा होना	विचार सीमित होना	पाके केरा होना	नाजुक होना

वाक्य विचार

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>परिभाषा:— जिन शब्द समूह से बात पूरी तौर से समझ आ जाए, उसे वाक्य कहा जाता है।</p> <p>हर वाक्य में क्रिया अवश्य होनी चाहिए।</p> <p>वाक्य के दो भाग हैं:</p> <p>1. उद्देश्य 2. विधेय</p> <p>उद्देश्य:— किसी वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।</p> <p>उदाहरण: रमा खा रही है।</p> <p>उपरोक्त वाक्य में रमा के बारे में बताया गया है, अतएत यहाँ उद्देश्य रमा है।</p> <p>विधेय:— किसी वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ बताया जाता है उसे विधेय कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण में 'खा' उद्देश्य है और 'खा रही है' विधेय है।</p> <p>हाँ, यह भी जान लें कि आज्ञा सूचक वाक्यों में उद्देश्य छिपा हो सकता है।</p>	<p>परिभाषा:— जेन शब्द समूह ले कोन्हों बात हा सही ढंग ले समझ में आ जाए, उही ला वाक्य कथे।</p> <p>हर वाक्य में क्रिया जरूर होना चाही।</p> <p>वाक्य के दू भाग हे:—</p> <p>1. उद्देश्य 2. विधेय</p> <p>उद्देश्य:— कोन्हो वाक्य में जेकर बारे में कुछु बताय जाथे, वोला उद्देश्य कथे।</p> <p>उदाहरण:— जगेसर भात साग खावत हे।</p> <p>उपर के वाक्य में जगेसर के बारे बताय गेहे, जगेसर ह उद्देश्य हरे।</p> <p>विधेय:— कोन्हों वाक्य में उद्देश्य के बारे में कुछु बात बताय जाथे वोला विधेय केहे जाथे। उपपर के नमूना में 'जगेसर' उद्देश्य हरे अउ 'भात-साग खावत हे' ये हा विधेय हरे।</p> <p>हमला ये भी जाने ल परही कि आज्ञा सूचक (आदेश वाले) वाक्य में उद्देश्य हा लुकाय रथे।</p>

उदाहरण:- (क) उधर घूमो।

(ख) शांत रहों।

उपरोक्त दोनों में 'तुम' उद्देश्य छिपा है।

वाक्य के भेद

रचना के आधार पर:-

1. सरल या साधारण वाक्य - सीता गाना गाती है।
2. संयुक्त वाक्य - छात्र पढ़ रहे हैं और वर्षा हो रही है।
3. मिश्रित वाक्य - अध्यापक कहते हैं कि सुबह उठकर पढ़ना चाहिए।

अर्थ के आधार पर:-

1. विधानवाचक
2. निशेधात्मक या नकारात्मक
3. प्रश्नवाचक
4. विस्मयादिबोधक
5. इच्छावाचक
6. आज्ञावाचक
7. संकेतवाचक
8. संदेहवाचक

इनके बारे में विस्तार से जानकारी आगे की कक्षाओं में मिलेगी।

उदाहरण:- (क) जाव खेलो।

(ख) चुपचाप रहो।

उपपर के दोनों वाक्य में 'तुम' उद्देश्य है लुकाय है।

वाक्य के भेद

रचना के आधार पर:-

1. सरल या साधारण वाक्य - छोटी रोज स्कूल आते।
2. संयुक्त या जुड़े वाक्य - लड़कामन पढ़त है अउ पानी गिरत हे।
3. मिसरित या मिश्रित वाक्य - गुरुजी कथे कि बिहनिया ले उठ के पढ़ना चाही।

अर्थ के आधार पर:-

1. विधानवाचक
2. निशेधात्मक या नकारात्मक
3. प्रश्नवाचक
4. विस्मयादिबोधक या अचरित वाक्य
5. इच्छावाचक
6. आज्ञावाचक
7. संकेतवाचक
8. संदेहवाचक

इँखर बारे में बिसतार ले जानकारी आघू के कक्षा मा मिलही।

संदर्भ ग्रंथ

- ⇒ डॉ. चितरंजन कर/डॉ. सुधीर शर्मा, 2006, बोलचाल की छत्तीसगढ़ी (स्पोकन छत्तीसगढ़ी) वैभव प्रकाशन, आमीनपारा चौक पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)
- ⇒ पुनीत गुरुवंश, 2016 शब्दसागर, (छत्तीसगढ़ी शब्दकोश), छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, रायपुर (छ.ग.)
- ⇒ हरि ठाकुर/डॉ. पाले वर शर्मा, शिक्षादूत, छत्तीसगढ़ की लोकभाषा छत्तीसगढ़ी, शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ राम कुमार वर्मा, 18 अप्रैल 2011, हाना, छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ और कहावतों, भारदा आफसेट प्रिंटर्स, प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ लेखक मंडल, 2019, शाखा गुड़ी छत्तीसगढ़ी भाषा शिक्षण विकास हेतु संदर्शिका जिला शिक्षा एवम् प्रशिक्षण संस्थान, अछोटी दुर्ग (छ.ग.).
- ⇒ हरिराम पटेल, 2016, हमर छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ व्याकरण, कॉम्पिटिशन एकेडमी बिलासपुर (छ.ग.).
- ⇒ डॉ. शंकर शेष, 1973, छत्तीसगढ़ी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म.प्र.).
- ⇒ आस्था अग्रवाल, मेरी व्याकरण पुस्तक कक्षा 6वीं, युगबोध प्रकाशन, 6 समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)
- ⇒ डॉ. नारायण स्वरूप भार्मा 'सुमित्र', 2012, व्यावहारिक हिन्दी, मंगल प्रकाशन, एक-96, वेस्ट ज्योति नगर, दिल्ली.

- ⇒ दयाशंकर शुक्ल, 1968 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, छत्तीसगढ़ी शोध- संस्थान-रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ संपादक मंडल 2017, प्राथमिक स्तर पर सीखने प्रतिफल, कक्षा 1-5, राज्य भौक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ डॉ. दीक्षा द्विवेदी, 2013, अच्छी हिन्दी तथा व्याकरण प्रयोग, दिल्ली पुस्तक सदन, शाहदरा, दिल्ली.
- ⇒ ऊषा टण्डन, 2008, आओ व्याकरण सीखें, पलक प्रकाशन, इलाहाबाद (उ.प्र.).
- ⇒ डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा/डॉ. सुधीर शर्मा, 2006, मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण पोथी प्रकाशन, भिलाई (छ.ग.).
- ⇒ डॉ. चितरंजन कर, 1993, छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियाँ, भाषा विज्ञान अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय - रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ डॉ. चन्द्रकुमार चंद्राकर, 2008, मानक छत्तीसगढ़ी व्याकरण, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.).
- ⇒ प्यारे लाल गुप्ता, 1973, प्राचीन छत्तीसगढ़, लीडर प्रेस इलाहाबाद (उ.प्र.).
- ⇒ मदन लाल गुप्ता, 1996, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (प्रथम भाग) भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, बिलासपुर (म.प्र.)
- ⇒ मदन लाल गुप्ता, 1996, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (द्वितीय भाग) भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, बिलासपुर (म.प्र.)

- ⇒ एस.पी. परमहंस/डॉ. शिखा त्रिवेदी, 2006, हिन्दी मुहावरा कोष, दिल्ली पुस्तक सदन, शाहदरा दिल्ली.
- ⇒ राजेन्द्र चन्द्रकांत राय/नर्मदा प्रसाद इन्दुरख्या, 2009, आधुनिक हिन्दी निबंध, मुकेश पुस्तक निलम, जबलपुर (म.प्र.)
- ⇒ डॉ हरिचरण शर्मा, 2005 हिन्दी साहित्य का इतिहास, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर (राजस्थान).
- ⇒ डॉ मन्नू लाल यदु, 25 जून 2001, छत्तीसगढ़ की अस्मिता, छत्तीसगढ़ कला, भाषा और संस्कृति, कृष्ण सखा प्रेस, टूरी हटरी, रायपुर (छ.ग.)
- ⇒ डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा, 2002, छत्तीसगढ़ी लेखन का मानकीकरण, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)
- ⇒ डॉ. विजय नारायण सिंह, 2007, लोकोक्तियों मुहावरा कोष, ग्रंथलोक, दिल्ली.
- ⇒ डॉ. हरदेव बाहरी, 2004, हिन्दी वर्तनी और व्याकरण अशुद्धि शोधन, विद्या प्रकाशन मंदिर नई दिल्ली.
- ⇒ डॉ. (श्रीमती) कृष्णा चटर्जी, 2006, छत्तीसगढ़ के प्रकाशित आंचलिक उपन्यासों का अनुशासीन, भावना प्रकाशन, दिल्ली.
- ⇒ सत्यव्रत शास्त्री, 2006, सुभाषितसाहस्री, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.
- ⇒ श्रीमती दविन्दर कौर ब्राइट, ब्राइट्स, हिन्दी व्याकरण, ब्राइट पब्लिकेशंस, दरियागंज, नई दिल्ली.,

- ⇒ डॉ. पुरुषोत्तम आसेपा, 2005, छन्दों में व्याकरण, सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड, बीकानेर, राजस्थान.
- ⇒ डॉ. शिवराज छंगाणी, 1997, बाल ज्ञान पर्यायवाची काश, रूपान्तर, बीकानेर, राजस्थान.
- ⇒ मदन मोहन उपाध्याय, 2008, पुरखौती, लोकोक्तियाँ, मुहावरे और पहेलियाँ (बिलासपुर अंचल की भाषायी विविधता का संकलन) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
- ⇒ डॉ. पुरुषोत्तम आसेपा, 2005, बाल शब्द कोश, संधि, समास, शब्दकोश, सूर्य प्रकाशन मंदिर दाऊजी रोड, बीकानेर, राजस्थान.
- ⇒ डॉ. ओमप्रकाश, 2006, विद्यार्थी हिन्दी शब्दकोष, शिक्षा भारती, क मीरी गेट, दिल्ली.
- ⇒ श्रीपत राय, सचित्र प्राथमिक हिन्दी बालकोष.
- ⇒ मनोरमा जफा, 2006, सचित्र हिन्दी, बाल शब्दकोष, वंदना बुक एजेंसी, ग्राउंड फ्लोर, 109, ब्लॉक बी, प्रीत विहार, दिल्ली.
- ⇒ डॉ. मन्नू लाल यदू, 1979, छत्तीसगढ़ी, लोकोक्तियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, भाषिका प्रकाशन, रायपुर (म.प्र.)